‘ScholarNova Research Journal’
(International Interdisciplinary Peer Reviewed Journal)
ISSN: Online

हिंदी दलित साहित्य और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर

डॉ. मीना ठाकुर
सहयोगी प्राध्यापक
श्री शाहू मंदिर महाविद्यालया पर्वती पुणे
Email- meenathakurssmm@gmail.com
Mob: 9850211439

प्रस्तावना एवं साहित्य समीक्षा:

दलित शब्द का अर्थ है मसला हुआ रौंदा हुआ। दुसरे शब्दों में दलित वह है जिसका शोषण हुआ है। मार्कसवादी शोषित जिसमें मजदूर, नारी, पुरूष आदि शामिल है को दलित मानते है परंतु सर्व सामान्य लोग दलित को अनुसूचित जाति और जनजातियों से जोडते है जिन्हें वर्ण व्यवस्था में शुद्र कहा गया है। दलित साहित्यकारों का एक बहुत बडा खेमा मानता हे कि दलितों द्वारा दलितों के जीवन गया है 'दलित साहित्य' है। पर लिखा गया साहित्य जिसमें उनके दुख, शोषण, उत्पीडन को अभिव्यक्त किया।

'दलित साहित्य' का उद्भव मराठी साहित्य में एक साहित्यिक सामाजिक विद्रोह के रूप में हुआ है जिसके माध्यम से दलित शोषित समाज का विद्रोही रूप मुखरित हुआ। जिसे अछूत कहकर सदियों तक मनुष्य जीवन की सभी आवश्यकताओं और सुविधाओं से वंचित रखा गया जिसे केवल दुख, वेदना, गुलामी, अपमान, आँसुओं से भरी जिंदगी बिताने के लिये विवश किया गया। गांवों नगरों से दूर मुख्य धारा से अलगांव ही नही किया बल्कि परंपराओं को वहन करने की सख्ती की। उस अंधकारमय जीवन से निकाल कर उनके जीवन में रोशनी लाने का कार्य डॉ. भीमराव आंबेडकर ने किया। अस्पृश्यता निवारण और बहुजन समाज के हित के लिये सम्पूर्ण जीवन भर कार्य करने वाले महात्मा ज्योतिबा फुले डॉ. आंबेडकर के प्रेरणा स्रोत बने ।

निम्न जाति में जन्मे भीमराव आंबेडकर कुशाग्र बुद्धि के थे। अनेक कठिन परिस्थितियों में उन्होंने अखंड परिश्रम के द्वारा शिक्षा ग्रहण की। शिक्षा ग्रहण करते समय छुआछात के कारण उन के मन पर बहुत आघात लगा। इसी कारण उन्होंने अपने पीडित बंधु, बांधवों के उद्धार की प्रतिज्ञा थी। उन्होंने पैसा, मान सम्मान, व्यक्तिगत सुख आदि की परवाह किये बिना जीवन भर निम्नवर्ग के पीडितों और शोषितों के लिये कार्य किया ।

डॉ. आंबेडकर ने अर्थशास्त्र, राज्यशास्त्र, कानून, धर्मशास्त्र और समाजशास्त्र आदि अनेक विषयों में उच्च शिक्षा प्राप्त की। स्वतंत्रता से पहले और बाढ में उच्च पदों के विभूषित किया ।

डॉ. आंबेडकर ने अनेक दलित मुक्ति आंदोलन किये जिसमें से कुछ बत महत्वपूर्ण है मार्च १९२७ में महाड के चवदार तालाब का पानी पीया और उनके हजारों अनुयायी ने भी उस तालाब का पानी पिया जिसे हुने की भी उन्हें अनुमति नहीं थी। ऐसा कर के डा. आंबेडकर ने छुआछत और और अस्पृश्यता के विरुद्ध मानव अधिकारों को प्राप्त करने के लिये दलित समाज का मनचात बढ़ाया। इस तरह का विद्रोह भारत के इतिहास में अभूतपूर्व था। इस घटना से डा. आआंबेडकर ने समाज क्रांति की लहर सारे भारत में फैला दी। स्वतंत्रता भीख मांगने पर नही मिलती अपने बल पर हासिल करनी पड़ती है इस सत्य का पाठ दलितों को पड़ा रहे थे। इस क्रांतिकारी संघर्ष का सवर्णो द्वारा जोरदार विरोध हुआ उनकी परंपराग्रस्त मानसिकता को इससे धक्का लगा। इस आंदोलन के फलस्वरूप साहित्य में हुये परिवर्तनों को प्रेमचंद और अन्य साहित्यकारों की रचनाओं पर देखे जा सकते हैं। डा. आंबेडकर जब महाड की सत्याग्रह कर रहे थे तब प्रेमचंद 'ठाकुर का

कुआँ कहानी की रचना प्रक्रिया में लगे थे। दिसंबर १९२७ को डॉ. आंबेडकर ने 'मनु स्मृति' का दहन कर मनु द्वारा निर्मित हिंदू धर्मीय विषम समाज रचना के विरोध को प्रकट किया। 'मनु स्मृति' का दहन एक क्रांतिकारी कदम था।

पहली भारतीय गोलमेज परिषद् १९३० को लंदन में हुई इस परिषद में भारतीय दलितों के प्रतिनिधि के रूप में डा. आंबेडकर उपस्थित हुये थे और उन्होंने दलितों के अनेक प्रश्न वंहा रखे, जिन पर गम्भीरता से विचार किया गया ।

हिदु धर्मावलंबियों की मानसिकता को देख कर १९३५ में डॉ. आंबेडकर ने दलितो द्वारा धर्मान्तर की घोषणा की। उन्होंने कहा था "मैंने हिन्दु धर्म में जन्म लिया है परंतु में हिन्दु बने रह कर मरना नहीं चाहता। सभी धर्मो का गहन अध्' न कर डॉ. आंबेडकर ने अपने अनुयायीयों को 'बुद्ध धर्म दिया। जो स्वतंत्रता, समता बंधुता पर आधारित था ।

डॉ. आंबेडकर ने शिक्षा के महत्व को समझा था। इस लिये १९४५ में बंबई में 'पीपल्स एज्युकेशन सोसाइटी' की स्थापना की। जिसके अंतर्गत बंबई में सिद्धार्थ कालेज और औरंगाबाद में मिलिंद कालेज की स्थापना हुई। बहुत बड़ी संख्या में दलित विद्यार्थियों ने शिक्षा ग्रहण करनी शुरू की। अनेक शिष्यवृत्तियो की शुरूआत हुई। इन महाविद्यालयों ने डॉ. आंबेडकर की विचार धारा को आगे बढाया और उनके बाद इस की बागडोर यहां के शिक्षित दलित युवकों ने संभाली। दलित लेखको की रचनाओ को प्रकाशित करने के लिये 'दलित साहित्य मंच' की आवश्यकता थी इस लिये 'मिलिंद साहित्य सभा ' की स्थापना की गई। 'अस्मिता य और बाद में 'अस्मितादर्श' पत्रिकाओं के द्वारा दलित साहित्य का प्रकाशन शुरू हुआ। दलित साहित्य की शुरूआत हिन्दी से पहले मराठी भाषा में हुई। बाबूराव बागुल लिखित 'जेव्हा मी जात चोरली' (जब मैंने जात छिपाई) कहानी संग्रह ने मराठी साहित्य की मानसिकता को झकझोर दिया था। दलित साहित्य को लेकर मराठी समीक्षा को अपने मानदंड बदलने पड़े। दलित साहित्य के विकास से ‘अस्मितादर्श’ और ‘अस्मिता’ पत्रिका से दलित लेखको में नया उत्साह का संचार हुआ। अपनी रचनाओं को प्रकाशित कराने का उन्हें अपना मंच मिला। इसी समय बाबूराव बागुल का कहानी संग्रह ‘मरण स्वस्त होत आहे’ (मृत्य सस्ती हो रही है) प्रकाशित हुआ यह दलित साहित्य का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है । दया पवार, अर्जुन डांगळे, वामन, निंबाळकर, नामदेव ढसाळ, केशव मेश्राम, बामन इंगळे, यशवंत मनोहर, शंकरराव खरात आदि दलित लेखको की रचनाये ‘अस्मितादर्श’ में प्रकाशित हुई। दलित कवियों और लेखकों को महाराष्ट्र ‘बौद्ध साहित्य सभा’ ने एकत्रित कर प्रथम सम्मेलन का आयोजन किया । इस सम्मेलन में प्रथम दलित कविताओं का संकलन ‘आकार’ का प्रकाशन हुआ । जिसमें बाबूराव बागुल, दया पवार, अर्जुन डांगळे, यादव राव गांगुर्डे, हरीश बुकाणे, चोखा कांबले, हीरा बनसोड, बंधु माधव की कविता संकलित है ।

डॉ. आंबेडकर की प्रेरणा से दलितों में जागरण के साथ आत्मविश्वास पैदा हुआ । महाराष्ट्र में यह जनजागृति पहले आयी। हिन्दी में दलित साहित्य का जब आरंभ हुआ तब तक मराठी दलित लेखक अपने को स्थापित कर चुके थे। हिन्दी दलित साहित्य सन् १९८० के बाद अनेक विद्याओं में रचा जाने लगा। दलित कवियों में ओम प्रकाश वाल्मीकि सुशीला टाकभोरे, कंवल भारती, नैमिश्राय, डॉ. शांति यादव सुदेश तनवर, विनोद कुमार उनके आदि अनेक दलित कवियों ने आक्रोश के स्वर प्रबल किये है। दलित आत्मकथा लेखन में ओमप्रकाश वाल्मीकी की ‘जूठन’ नैमिशराय की ‘अपने-अपने पिंजरे’ माताप्रसाद की ‘झोपडी से राजभवन तक’ कौशल्या बैसत्री का ‘दोहरा अभिशाप’ आदि उल्लेखनीय है।

दलित कहानी लेखन में अनेक कहानी संग्रह प्रकाशित हुये जिनमें मोहनदास नैमिशराय का ‘आवाज’ ओमप्रकाश वाल्मीकि का ‘सलाम’ दयानंद बटोही का ‘सुरंग’ सत्यप्रकाश का ‘चंद्र मौलि का रक्त बीज’ सुशीला टाकभौरे का ‘अनुभूत के घेरे’ आदि महत्वपूर्ण है। दलित लेखक डॉ. जय प्रकाश कर्दम का उपन्यास ‘छप्पर’ हिन्दी का पहला दलित उपन्यास है, जिसमें दलित जीवन का यथार्थ अंकित हुआ है।

दलित उपन्यासकारों में डा. रामजी लाल सहायक का ‘बंधन मुक्ति’ श्रवण कुमार का ‘प्रेमयात्रा’ बाबूलाल मधुकर का ‘पूर्ण सत्य’ कावेरी का ‘काली रेत’ आदि उल्लेखनीय है।

नाटक तथा एकांकी रचना में माताप्रसाद कृत ‘अछूत का बेटा’ ‘धर्म के नाम पर घोखा’ ‘प्रतिशोध’ ‘अंतही बेडिया’ आदि उल्लेखनीय है। मोहनदास नैमिशराय का चर्चित नाटक ‘हैलो काम रेड’ कई बार मंचित हो चुका है। अन्य दलित नाटककारों में भीमसेन संतोष का ‘कर्म योगी’ लाल सिंह यादव का ‘यशंबूकवध’ कर्मशील भारती का ‘मान सम्मान’ डॉ. एन सिंह ‘कठौती में गंगा’ आचार्य गुरूप्रसाद का ‘भूख आदि उल्लेखनीय है।

दलित आलोचना के क्षेत्र में डा. धर्मवीर, डॉ. तुलसीदास, डॉ. चमनलाल, डॉ एवं दलित विमर्श को विमल थोरात, डॉ. पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी आदि उल्लेखनीय है। दलित चिंतन आलोचना को लेकर पिछले दशक से से हिन्दी में अनेक शोध ग्रंथ, ग्रंथ, आलेख, समालोचना ग्रंथ आदि प्रकाशित हो चुके है। हिन्दी में ‘दलित विमर्श’ की संकल्पना को स्थापित करने का श्रेय ‘हंस’ के संपादक डा. राजेंद्र यादव को है। समीक्षा ग्रंथों में डॉ. विजयकुमार संदेशद्वारा संपादित ‘दलित चेतना और स्त्री विमर्श’ श्यौ राजसिंह बैचन द्वार संपादित- ‘दलित प्रक्रिया’ कंवल भारती द्वारा लिखित ‘दलित विर्मश की भूमिका’ जयप्रकाश कर्दम की ‘दलित साहित्य’ डॉ. चमनलाल द्वार संपादित ‘भारतीय साहित्य में दलित व स्त्रीलेखन’ ‘दलित और अश्वेत साहित्य’ ‘दलित साहित्य एक मूल्यांकन’ आदि प्रमुख है। दलित साहित्य पर कई पत्रिकाओं ने विशेषाक निकाले है, जिनमें ‘हंस’ सारिका, संचेतना, आजकल आदि प्रमुख है।

बीसवी सदी के आरंभ से लेकर आज तक दलित साहित्य लेखन डॉ. आंबेडकर की प्रेरणा लेकर विकास की ओर अग्रसर है। दलित साहित्य की आवश्यकता और उसकी भूमिका के बारे में दलित लेखकों को संबोधित करते हुये डॉ. आंबेडकर ने कहा था- “हमारे जीवन कर्तव्य और संस्कृति की ओर हमें ध्यान देना होगा। अंतर्मुख होकर विचार करने से हमारे सामने भयावह स्थिती स्पष्ट हो जायेगी कि हमारे जीवन मूल्य और सांस्कृतिक मूल्य नष्ट हो रहे है। अतः नष्ट हो रहे जीवन मूल्य और सांस्कृतिक मूल्यों को बचाने के लिये दलित साहित्यकारों को जागरूकता के साथ ही प्रयत्नशील हो जाना चाहिए ।

उनके इस विचार से स्पष्ट होता है कि डॉ. आंबेडकर साहित्य के प्रभाव से भली भांति परिचित थे। डॉ. आंबेडकर की विचारधारा के केंद्र में मनुष्य था । इसकी सीमाओं के दायरे में पुरी मानवता समा जाती है। आज दलित लेखन अत्यंत सुचारू रूप से अपना मार्ग बना रहा है आज वो शिक्षित है संगठित है और संघर्षशील है। आज जो दलित साहित्य लिखा जा रहा है वह महत्वपूर्ण है और भारतीय साहित्य की एक नयी और विशिष्ट निधि है वह साहित्य का नया इतिहास निर्मित करने में सक्षम है।

उदाहरण सूची –

1.दलित साहित्य का मूल्यांकन प्रो. चमनला
2. में दलित आंदोलन एक मूल्यांकन कन्हैयालाल चंचरीक
3.गांधी जी और उनका बाद ई. ए. महात्मा एस नम्बुद्रिपद
4. विमर्श डॉ. नरसिंह दास वणकर
5.‘दलित साहित्य सम्मेलन’ पत्रिका १७ जनवरी १९७६